ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in December 2025

गिरिराज किशोर के उपन्यासों में प्रवासी जीवन ('पहला गिरमिटिया' के विशेष संदर्भ में)

पंकज कुमार, शोधार्थी, हिंदी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. रामनरेश राम, (सहायक आचार्य), हिंदी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

शोध-सार

प्रवास आधुनिक मनुष्य की एक केन्द्रीय नियति है। यह केवल भौगोलिक स्थान-परिवर्तन नहीं, अपितु अस्मिता के क्षरण, अमानवीयकरण और पुनर्निर्माण की एक सुदीर्घ प्रक्रिया है। प्रस्तुत शोध-पत्र गिरिराज किशोर के उपन्यासों में चित्रित प्रवासी-जीवन का अनुशीलन करता है, जिसमें उनका महाकाव्यात्मक उपन्यास 'पहला गिरमिटिया' केन्द्र में है। 'बा', 'परिशिष्ट', 'दो' तथा 'इक आग का दरिया है' सहायक संदर्भ के रूप में लिए गए हैं। शोध की पद्धति निकट-पाठ (close reading) पर आधारित है। मूल स्थापना यह है कि गिरिराज किशोर के यहाँ प्रवास सदा किसी संरचनात्मक दबाव – भूख, जातीय उत्पीड़न या आर्थिक विवशता – की परिणति है, और उन्नीसवीं सदी का 'मज़बूरी-आश्रित शारीरिक विस्थापन' क्रमशः इक्कीसवीं सदी के 'स्वैच्छिक प्रतिभा-पलायन' तक पहुँचता है। दोनों छोरों के बीच शोषण की एक अदृश्य निरन्तरता बहती रहती है।

बीज-शब्द : प्रवासी-विमर्श, गिरमिट-प्रथा, वस्तुकरण, सबाल्टर्न, विस्थापन, सत्याग्रह, ब्रेन-ड्रेन, डायस्पोरा।

1. प्रस्तावना

मनुष्य के इतिहास में प्रवास कोई नई परिघटना नहीं है। किन्तु आधुनिक और उत्तर-औपनिवेशिक संदर्भ में यह केवल एक सांख्यिकीय घटना नहीं रह जाता। प्रवासी-जीवन का यथार्थ मनुष्य की अस्मिता के क्रमिक क्षरण और पुनर्निर्माण की एक रक्तरंजित यात्रा है। हिन्दी आलोचना में दलित-विमर्श और स्त्री-विमर्श ने तो अपनी पहचान बना ली, पर प्रवासी-विमर्श अब भी एक विकासशील क्षेत्र है। गिरिराज किशोर का साहित्य इस क्षेत्र को एक ठोस आधार देता है।

गिरिराज किशोर (1937-2020) हिन्दी के उन कथाकारों में हैं, जिन्होंने प्रवास को एक केन्द्रीय चिन्ता बनाया। उनका 'पहला गिरमिटिया' महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका-प्रवास और वहाँ के गिरमिटिया मज़दूरों के संघर्ष का महाकाव्यात्मक आख्यान है। आलोचकों ने इसे गाँधीभाई का महाकाव्यात्मक कथ्य कहा है।[1] प्रस्तुत शोध-पत्र इसी प्रवासी-जीवन के विविध आयामों का विश्लेषण करता है। शोध का उद्देश्य यह दिखाना है कि गिरिराज किशोर के यहाँ प्रवास स्वेच्छा का नहीं, विवशता का विषय है। यह दृष्टि उनके प्रवासी-विमर्श को आँकड़ों से ऊपर उठाकर एक मानवीय अनुभव बना देती है।[2]

2. गिरमिट-प्रथा और मानव-देह का वस्तुकरण : 'पहला गिरमिटिया'

उन्नीसवीं सदी में दास-प्रथा के औपचारिक उन्मूलन के बाद ब्रिटिश साम्राज्यवाद को सस्ते श्रम का संकट हुआ। इसी संकट के समाधान-रूप में 'गिरमिट' (अंग्रेज़ी 'Agreement' का अपभ्रंश) के नाम पर एक नई दास-प्रथा गढ़ी गई। काग़ज़ पर यह स्वैच्छिक अनुबंध था; व्यवहार में यह भूख और अज्ञान से विवश मनुष्यों को बाँधने का तन्त्र था। समुद्री जहाज़ों में मज़दूरों को इतनी निर्ममता से ठूँसा गया कि एक वयस्क के हिस्से में सोने तक की जगह मुश्किल से छह फुट लम्बी और दो फुट चौड़ी आती थी।[3] वस्तुकरण का सबसे नग्न रूप तब प्रकट होता है, जब गोरा खेतिहर क्राम्पटन देवारम और उसके परिवार को 'ख़रीदने' आता है। वह एक मनुष्य को नहीं, उत्पादन की मशीन को परखता है। बच्चों को 'पिल्ले की तरह' उठाकर तौला जाता है।[4] यह वही प्रक्रिया है, जिसे

1डॉ. त्रिभुवन राय, 'पहला गिरमिटिया : गाँधीभाई का महाकाव्यात्मक कथ्य', गांधी मार्ग, गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।
2कुमारी आकांक्षा, 'प्रवासी भारतीय साहित्य में गाँधी : एक विस्तृत अध्ययन', सहचर ई-पत्रिका, ISSN 2395-2873।
3गिरिराज किशोर (1999), पहला गिरमिटिया, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ. 28।
4वही, पृ. 34।

मार्क्स ने श्रम का वस्तुकरण कहा – जहाँ मनुष्य की आत्मा को नष्ट करके उसे उत्पादन का पुर्ज़ा बना दिया जाता है।

निस्सहायता का चरम करनपिल्लै की मृत्यु में है। बीमार करनपिल्लै, जिसका क्रमांक निन्यानवे था, को जेल में कड़ी बेगार दी जाती है। चक्कर खाकर गिरे उसे 'बहाना' समझकर ठोकरें मारी जाती हैं, और वह पानी के ड्रम में गिरकर दम तोड़ देता है। मारने वाला हँसते हुए कहता है – 'पी पानी, हो जा ताजा।'[5] प्रवासी का जीवन यहाँ इतना सस्ता है कि उसकी मृत्यु भी एक क्रूर मज़ाक बन जाती है।

'सडरिंघम' और 'फ्यूजिलियर' जहाज़ों के टूटने पर लगभग एक सौ सरसठ लाशें समुद्र-तट पर आ लगती हैं, जिन्हें बिना सम्मान के गड्ढों में दफ़न कर दिया जाता है।[6] यहाँ समुद्र प्रवासी मज़दूर के लिए एक सामूहिक कब्रगाह बन जाता है। साम्राज्यवादी व्यवस्था के लिए प्रवासी मनुष्य नहीं, 'ईंधन' था। 'कुली' शब्द स्वयं अमानवीयकरण का पहला अस्त्र है – वह मनुष्य को नाम, परिवार और अतीत से काटकर मात्र एक श्रम-इकाई में बदल देता है।

गिरिराज किशोर इस वस्तुकरण को व्यक्ति, दांपत्य और भविष्य – तीनों स्तरों पर खोलते हैं। राशन की चर्चा में बच्ची की भविष्य की भूख तक को 'लागत' के रूप में आँका जाता है। आलोचकों ने रेखांकित किया है कि लेखक ने गांधी-जीवन के तीन पक्षों – 'मोहरनिया', 'मोहनदास' और 'महात्मा' – को इसी विशाल, लगभग नौ सौ चार पृष्ठीय फलक पर साधा है।[7]

3. प्रतिरोध, सत्याग्रह और गांधी का रूपान्तरण

'पहला गिरमिटिया' केवल पीड़ा का आख्यान नहीं, प्रतिरोध का भी आख्यान है। अमानवीय परिस्थितियों के बीच प्रवासी मज़दूर निष्क्रिय शिकार बने नहीं रहते। गन्ने के खेतों की हड़तालें, संगठित विरोध और अन्ततः सत्याग्रह – ये उस यात्रा के पड़ाव हैं, जिसमें 'कुली' धीरे-धीरे एक राजनीतिक कर्ता में बदलता है।

बोअर-युद्ध के समय मोहनदास घायलों की सेवा के लिए एम्बुलेंस-दल संगठित करते हैं। यह सेवा उनकी नैतिक चेतना का विस्तार है।[8] आगे 'एशियाटिक पंजीकरण अधिनियम' – 'काला कानून' – के विरुद्ध डरबन में सत्याग्रह-सभा होती है, जहाँ हिन्दुस्तानियों के एकजुट प्रतिरोध का आह्वान किया जाता है।[9]

इस प्रकार उपन्यास प्रवास को केवल त्रासदी नहीं, एक रूपान्तरणकारी प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है। जिस 'आग के दरिया' ने असंख्य कुलियों को राख किया, उसी आग ने एक प्रवासी को तपाकर 'महात्मा' में ढाल दिया। शोध-लेखों में भी इस वैचारिक रूपान्तरण को आत्म-शुद्धि की एक क्रमिक प्रक्रिया कहा गया है।[10] 'पहला गिरमिटिया' का यही सबाल्टर्न इतिहास-दर्शन है : भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की जड़ें समुद्र-पार के उन बागानों में भी थीं, जहाँ अपमानित प्रवासी मज़दूरों ने पहली बार अपनी गरिमा के लिए सिर उठाया।

4. प्रवासी स्त्री, आंतरिक प्रवास और आधुनिक पलायन: प्रवास की क़ीमत स्त्री दोहरी चुकाती है। 'बा' में कस्तूरबा का संत्रास इसका प्रमाण है। नस्ल और पितृसत्ता का संयुक्त शिकंजा उन पर पड़ता है। 'काले कानून' के विरुद्ध वे अपना निजी सत्याग्रह आरम्भ करती हैं और बेस्वादा भोजन का व्रत लेती हैं।[11] यहाँ प्रवासी स्त्री केवल पीड़िता नहीं, संस्कृति की संवाहक और प्रतिरोध की भागीदार भी है।

'परिशिष्ट' में विस्थापन एक 'आंतरिक प्रवास' का रूप लेता है। बावनराम जैसे पात्र जातीय-आर्थिक दमन से भागकर शहर में 'शहरी कुली' बन जाते हैं – अपने ही देश में अजनबी।[12] 'दो' की नायिका नीमा पितृसत्तात्मक असुरक्षा के

5वही, पृ. 39।
6वही, पृ. 50।
7सुरतनभाई एम. वसावा (2019), 'गिरिराज किशोर के उपन्यास "पहला गिरमिटिया" में गांधी का प्रभाव', रिसर्च गुरु, खंड 13, अंक 1, ISSN 2349-266X, पृ. 1503-1504।
8गिरिराज किशोर (1999), पहला गिरमिटिया, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ. 453।
9वही, पृ. 702।
10अंजु रॉय (2026), 'गिरिराज किशोर के उपन्यास "पहला गिरमिटिया" में गांधी का वैचारिक प्रभाव', सहचर ई-पत्रिका, ISSN 2395-2873।
11गिरिराज किशोर, बा, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पृ. 116-117।
12गिरिराज किशोर, परिशिष्ट, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पृ. 20।

कारण घर छोड़कर 'रोटी बनाने वाली मज़दूर' बनने को विवश होती है।[13] यह उसी गिरमिटिया मज़दूर का स्त्री-संस्करण है, जो भूख से भागकर अनिश्चित श्रम-भविष्य की ओर निकल पड़ता है।

'इक आग का दरिया है' में यही विस्थापन एक नया, चमकता और 'स्वैच्छिक' रूप ले लेता है। प्रोफेसर सहाय अपने बेटे को 'बड़ा करियर' बनाने अमेरिका भेजते हैं; प्रेमिका उमा इस 'आधुनिक स्वर्ग' के मोह पर तीखा व्यंग्य करती है।[14] यही 'बॉडी-ड्रेन' से 'ब्रेन-ड्रेन' तक का ऐतिहासिक संक्रमण है। उन्नीसवीं सदी का कुली शरीर से गुलाम था, पर आत्मा से अपनी मिट्टी से जुड़ा था; आधुनिक प्रवासी शरीर से स्वतन्त्र है, पर प्रायः आत्मा से जड़विहीन। विस्थापन का यह बदलता वर्गीय चरित्र ही गिरिराज किशोर की सबसे गहरी अन्तर्दृष्टि है।

5. निष्कर्ष

समूचे विवेचन से यह सिद्ध होता है कि गिरिराज किशोर के उपन्यासों में प्रवासी-जीवन एक बहुस्तरीय और ऐतिहासिक विकास-क्रम है। 'पहला गिरमिटिया' का कुली वैश्विक बाज़ार के लिए अपनी मातृभूमि से उखड़ता है; 'बा' की कस्तूरबा उस संत्रास को स्त्री-अस्मिता के रूप में भोगती हैं; 'परिशिष्ट' का बावनराम 'शहरी कुली' बनता है; और 'इक आग का दरिया है' का युवा 'करियर' के नाम पर स्वेच्छा से पश्चिम की ओर पलायन करता है।

इन सबको जोड़ने वाला सूत्र वही 'आग का दरिया' है, जो हाशिए के मनुष्य की देह, भाषा और संस्कृति को जलाकर सत्ताधीशों के महल रोशन करता आया है। गिरिराज किशोर प्रवासी को न केवल करुणा का पात्र बनाते हैं, न प्रतीकात्मक 'शिकार'; वे उसे उसकी समूची गरिमा, पीड़ा और प्रतिरोध-क्षमता के साथ एक जीवित मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यही 'अनुभूति का यथार्थ' उनके लेखन को समाजशास्त्रीय विश्लेषण से ऊपर उठाकर एक कालजयी साहित्यिक उपलब्धि बना देता है। यही उनके प्रवासी-विमर्श की स्थायी प्रासंगिकता है।

संदर्भ-सूची

- गिरिराज किशोर (1999). पहला गिरमिटिया. नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ।
- गिरिराज किशोर. बा. नई दिल्ली : राजकमल पेपरबैक्स।
- गिरिराज किशोर. परिशिष्ट. नई दिल्ली : राजकमल पेपरबैक्स।
- गिरिराज किशोर. इक आग का दरिया है. नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ।
- राय, त्रिभुवन (डॉ.). 'पहला गिरमिटिया : गाँधीभाई का महाकाव्यात्मक कथ्य'. गांधी मार्ग. नई दिल्ली : गांधी शांति प्रतिष्ठान। (उपलब्ध : hindi.mkgandhi.org/gmarg)।
- वसावा, सुरतनभाई एम. (2019). 'गिरिराज किशोर के उपन्यास "पहला गिरमिटिया" में गांधी का प्रभाव'. रिसर्च गुरु : ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसिप्लिनरी सब्जेक्ट्स, खंड 13, अंक 1, ISSN 2349-266X, पृ. 1503।
- रॉय, अंजु (2026). 'गिरिराज किशोर के उपन्यास "पहला गिरमिटिया" में गांधी का वैचारिक प्रभाव'. सहचर ई-पत्रिका, ISSN 2395-2873।
- आकांक्षा, कुमारी. 'प्रवासी भारतीय साहित्य में गाँधी : एक विस्तृत अध्ययन'. सहचर ई-पत्रिका, ISSN 2395-2873।

13गिरिराज किशोर, दो, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 78, 83।

14गिरिराज किशोर, इक आग का दरिया है, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ. 44।